ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-7* August- 2021
Innovation The Research Concept

छात्र राजनीति से सक्रिय राजनीति की ओर उन्मुखः हेमवती नन्दन बहुगुणा के सन्दर्भ में

From Student Politics to Active Politics: In the Context of Hemvati Nandan Bahuguna

Paper Submission: 05/08/2021, Date of Acceptance: 15/08/2021, Date of Publication: 25/08/2021

भुवन तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
एम0बी0पी0जी0 कॉलेज,
हल्द्वानी, उत्तराखंड, भारत

तारा चन्द्र
शोध छात्र,
राजनीति विज्ञान विभाग,
एम0बी0पी0जी0 कॉलेज,
हल्द्वानी, उत्तराखंड, भारत
सहायक प्राध्यापक
(गेस्ट फैक्लटी)
जी0डी0सी0, थलीसैंण
(पौड़ी गढ़वाल), उत्तराखंड, भारत

उत्तराखण्ड के पौड़ी जनपद के बुधाड़ी गाँव में जन्मे हिमालय पुत्र हेमवतीनन्दन बहुगुणा बचपन से उच्च प्रशासनिक अधिकारी बनने की चाह रखते थे किन्तु ब्रिटिश शासन के अत्याचार और उत्पीड़न का अहसास होने पर वे भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन मे शामिल हो गये। अपने उच्च शिक्षा के समय से ही बहुगुणा जी ने छात्र राजनीति से जुड़कर राजनीति क्षेत्र में भविष्य बनाने के संकेत दे दिये थे और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से छात्रसंघ का चुनाव लड़े। आजादी के पश्चात् बहुगुणा जी ने संसदीय राजनीति में प्रवेश किया। शासन में रहते हुए उन्होंने, गरीब, मजदूर, किसानों, समाज के कमजारे वर्गो के लिए स्वशासन से ही लड़ते रहे। बहुगुणा जी का राजनीतिक जीवन और उत्तरदायित्व वाला हो गया जब वे उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे। मुख्यमंत्री बनते ही बहुगुणा जी ने सर्वप्रथम वो कार्य किये जो गरीबों, वंचितों, असहाय, मजदूर, किसान आदि के लिए कहते थे। बहुगुणा जी को इसके लिए अपनी ही पार्टी का विरोध तक झेलना पड़ा था।

हिमालय पुत्र हेमवती नन्दन बहुगुणा राजनीति के इतिहास में एक उदाहरण है जो आज के राजनेताओं के लिए एक शोध का विषय है कि कैसे विषम परिस्थितियों में रहकर भी बहुगुणा जी ने अपने व्यक्तित्व को जनमानस के उद्धार के लिए समर्पित किया था।

Born in Budhadi village of Pauri district of Uttarakhand, Himalaya's son Hemvatinandan Bahuguna aspired to become a high administrative officer since childhood, but after realizing the tyranny and oppression of the British rule, he joined the Indian independence movement. From the time of his higher education, Bahuguna ji had indicated to make a future in the political field by joining student politics and contested the student union elections from Allahabad University. After independence, Bahuguna ji entered parliamentary politics. While in government, he kept fighting for self-government for the poor, labourers, farmers, weaker sections of the society. Bahuguna ji's political life became more responsible when he became the Chief Minister of Uttar Pradesh. As soon as he became the Chief Minister, Bahuguna ji first did those works which he used to call for the poor, the underprivileged, the helpless, laborers, farmers etc. Bahuguna ji had to face opposition from his own party for this.

Himalaya Putra Hemvati Nandan Bahuguna is an example in the history of politics, which is a topic of research for today's politicians, how Bahuguna ji had dedicated his personality for the salvation of the masses, despite living in difficult circumstances.

मुख्य शब्दः बुघाड़ी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, संसदीय राजनीति, आपातकाल, तुष्टीकरण की राजनीति, हिमालयपुत्र, स्टूडेण्टस फैडरेशन, प्रगतिशील वामपंथी विचार धारा, ट्रेडयूनियन, अस्थिकलश, जनमानस।

Bughadi, Allahabad University, Parliamentary politics, Emergency, Politics of appeasement, Himalayaputra, Students Federation, Progressive Leftist ideology, Trade Union, Asthikalash, Public Manas.

प्रस्तावना

नेहरू युग के बाद विभिन्न राजनीतिक उतार-चढ़ाव एवं समस्याओं के दौर से गुजरने के बाद भी देश के राजनीतिक शीर्ष पर हिमालय पुत्र हेमवती नन्दन बहुगुणा जी ने एक अलग पहचान बनाई थी। लगभग दो दशक तक राजनीति के केन्द्र बिन्दु रहे और देश की राजनीति में अपनी अहम भूमिका निभाई थी।

बहुगुणा जी ने बचपन से ही अपनी माँ की एक बात पर अपने लिए रास्ता बनाकर सबका भला करने का आदर्श चुना तो पिता की कार्यशैली और सत्य के प्रति निष्ठा ने उन्हें सार्वजनिक जीवन में जन समस्याओं का समाधान करने और विकास के प्रति सही दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया।हेमवती नन्दन बहुगुणा जी अपनी 10 वीं तक की पढ़ाई देहरादून से करने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए इलाहाबाद चले गये थे। उस समय इलाहाबाद के बारे में कहा जाता था कि वहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार भविष्य बनाने का अवसर मिलता है। गंगा यमुना की आबोहवा और मिट्टी में ही कुछ ऐसी रंगत थी कि परस्पर विरोधी विचारधारा भी वहाँ पर एक साथ आगे बढ़ते थे।और अन्त मे इलाहाबाद की भूमि में सफल वही छात्र होता था तो अपनी कड़ी मेहनत जारी रखते हुए आगे निकल जाता था। 1937 में जब बहुगुणा जी इलाहाबादपहुंचे तब उनके मन में दो बातें का

उथल-पुथल मच रहा था। एक अपने भविष्य के प्रति चिंता तो दूसरी देश में चल रहे राष्ट्रीय आन्दोलन में जाने का विचार। इन दोनों के बीच बहुगुणा जी उलझे हुए थे। इलाहाबाद जैसे शहर में रहकर दोनों मे से एक रास्ते को चुनकर भी आगे निकलने की पूरी सम्भावना थी। प्रारम्भ में उन्होंने अपनी पढ़ाई और कैरियर को ही महत्व दिया था लेकिन 1939 में जब महात्मा गांधी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्रों को असहयोग आन्दोलन मे शामिल होने का आह्वान किया तो बहुगुणा जी भी राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े थे।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् बहुगुणा जी ने छात्रों की एक संसद बनायी थी जिसमें उन्होंने विपक्ष का भी गठन किया था जैसे एक वास्तविक संसद में होता है पक्ष और विपक्ष दोनों सत्ता पक्ष का विरोध करने के लिए विपक्ष की भूमिका का होना आवश्यक होता है। जबकि वर्तमान छात्र राजनीति अपनी असल उद्देश्यों से भटक कर अनर्थक कार्यो में लगी रहती है। आजादी के पूर्व के छात्रों की गतिविधियों और वर्तमान छात्रों की गतिविधियों में काफी अन्तर आ गया है। स्वतंत्रता से पूर्व एवं पश्चात् भी छात्र राजनीति देश में सक्रिय रही है वहीं कई छात्रों ने अपना भविष्य बनाया है जिसमें बहुगुणा जी भी एक छात्रनेता थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रारम्भिक अवस्था में लोकतंत्र के सम्मुख कई प्रकार की चुनौतियाँ थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही देश विभाजन, जिसके चलते जगह -जगह साम्प्रदायिक आग फैलने लगी थी। साम्प्रदायिक गतिविधियों के रूकते ही देश के कई हिस्सों में मजदूरों, किसानों और दलितों का असंतोष पैदा हो गया था। बहुगुणा जी किसानों और मजदूरों के साथ खड़े थे और इस से किसानों का समर्थन किया की स्वतंत्रता के पश्चात् भी किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। बहुगुणा जी का सक्रिय राजनीति में सफर 1952 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से शुरू हुआ जो उनके मृत्युपरान्त तक जारी रहा।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्र राजनीति और उसके बाद स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के बाद चुनौतीपूर्ण करछाना विधानसभा सीट से चुनाव जीतकर हेमवतीनन्दन बहुगुणा ने कांग्रेस और राज्य की राजनीति में अपनी खास पहचान बना ली थी। कांग्रेस के राष्ट्रीय नेताओं से तो वे स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान ही सम्पर्क में आ गये थे किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विभिन्न ट्रेडयूनियनों का नेतृत्व कर के एक मजदूर नेता के रूप में भी प्रसिद्ध हो गये थे। करछाना जैसे ग्रामीण बहुल क्षेत्र से चुनाव में जीत दर्ज इस बात का प्रमाण है कि बहुगुणा जी शहरी क्षेत्र मंे ही नहीं अपितु ग्रामीण क्षेत्र में भी लोकप्रिय थे। एक निश्चित समयान्तराल मे आमजन के बीच लोकप्रियता ने ही उनके भविष्य के राष्ट्रीय व्यापी राजनीति का मार्ग प्रशस्त किया।

अध्ययन का उद्देश्य

छात्र राजनीति से सक्रिय राजनीति की ओर अग्रसर हुए हिमालय पुत्र अपने विचारों, सिधान्तों, उद्देश्यों के प्रति भी सजग थे। सत्ता में पहुंचने के बाद भी उन्होंने कभी आमजन लोगों का साथ नहीं छोड़, मजदूर, गरीब, असहाय, दलित, अल्पसंख्यक, एवं किसानों को लेकर बहुगुणा सदैव चिंतित रहते थे। उनके उत्थान को अपनी सरकारों से संघर्ष करते रहे।

शोध पत्र का उद्देश्य बहुगुणा जी के छात राजनीति से लेकर सक्रिय राजनीति तक के जीवन में प्रकाश डालना है। बहुगुणा जी का छात्र जीवन में भी राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति उत्सुकता और सक्रिय राजनीति में क्रान्तिकारी नेता के रूप जाने जाते है। वर्तमान छात्र राजनीति और राजनीतिक दलों, जनप्रतिनिधियों को भी बहुगुणा जी की तरह आम जनमानस का हिमायती बनना चाहिए। जनप्रतिनिधियों को न सिर्फ वातानुकूलित कमरों में बैठकर लोगों की समस्या को देखना चाहिए बल्कि धरातल पर उतरकर प्रत्यक्ष रूप से गरीब, असहायों, किसानों, की सुध लेनी चाहिए। आमआदमी न केवल वोट बैंक की फैक्ट्री है बल्कि इस देश का असल और सच्चा नागरिक भी है।

शीर्षक

हिमालय पुत्र हेमवती नन्दन बहुगुणा जी का जन्म 25 अप्रैल 1919 में तत्कालीन उत्तरप्रेदश के पौड़ी जनपद के बुघाड़ी गाँव (वर्तमान उत्तराखण्ड राज्य में) में हुआ था। इनके पिता का नाम रेवतीनन्दन बहुगुणा और माता का नाम पुन्नी देवी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा देवलगढ़ गुप्तकाशी माध्यमिक उखीमठ, खिर्सू और मिशन स्कूल चोपड़ा मे हुई। बहुगुणा जी बचपन से ही होनहार और प्रतिभा सम्पन्न मेधावी छात्र थे। उन्होंने देहरादून और इलाहाबाद से भी अपनी आगे की पढ़ाई पूरी की। इलाहाबाद में बहुगुणा जी स्टूडेन्ट फैडरेशन से जुड़ गये थे।

हेमवती नन्दन बहुगुणा जी पढ़ाई-लिखाई के साथ ही अन्य गतिविधियों में भाग लेते रहते थे। जिससे उनके राजनैतिक ज्ञान में और वृद्धि होती गयी। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय में इलाहाबाद विश्वविद्यालय पर भी राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव था। आन्दोलन के समय मे लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पॉल, महात्मा गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस आदि प्रमुख नेता यहाँ आते रहते थे। जिसका प्रभाव विश्वविद्यालय और उसके छात्रों पर पड़ना लाजिमी था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों में राजनैतिक और सामाजिक गतिविधियों को लेकर सदैव, उत्साहित रहते थे। बहुगुणा जी भी उनमें से एक थे। उस समय इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों को एक नेतृत्व की आवश्यकता थी जो उनको सही मार्ग दर्शन करा सके, राजनीति और राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित कर सके।

इलाहाबाद मे अध्ययन के समय बहुगुणा जी सुन्दरलाल छात्रावास मे रहते थे। छात्रावास में अधिकांश छात्र कुलीन घरों से सम्बन्ध रखते थे। अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान भी था। छात्रावास मंे छात्रों के बढ़ते उत्साह को देखते हुए बहुगुणा जी उनके जैसे बन गये और एक स्टूडेन्ट क्लब का गठन किया जिसमें विभिन्न कार्यक्रम और वाद-विवाद जैसी प्रतियोगिता होती थी।

1941 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्रसंघ के चुनाव हुये थे जिसमें बहुगुणा जी ने अपने साथियों और शिक्षकों के सहयोग से भाग लिया था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्रसंघ चुनाव से पहले उम्मीदवारों को विभिन्न चरणों से गुजरना पड़ता है जिसमे अपने भाषणों से छात्रों और शिक्षकों को प्रभावित कर के चुनाव जीतना होता था। बहुगुणा जी इस कला में माहिर होने पर छात्रसंघ चुनाव में सचिव पद पर विजयी प्राप्त की। तत्कालीन छात्र राजनीति का उद्देश्य राजनीति के शिखर पर पहुंचना या लाभ कमाना नहीं था। वरन् देश की रक्षा के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभानी थी। बहुगुणा जी छात्र राजनीति से जुड़ने के बाद इलाहाबाद में जगह-जगह छात्रों और युवाओं की बैठकें करने लगे थे। इसके साथ ही उनको राष्ट्रीय आन्दोलन और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक करने और उसमें देश के लिए आन्दोलन में कूदने के लिए प्रेरित करने लगे थे।

बहुगुणा जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र संघ सचिव थे लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी और कांग्रेस क बड़े नेताओ से सम्पर्क होने के कारण बहुगुणा जी छात्र आन्दोलन के नायक बन गये थे। एक छात्र नेता के रूप में बहुगुणा जी की ख्याति इतनी तेजी से बढ़ने लगी की, राष्ट्रीय नेताओं के सम्मुख तक उनका नाम आने लगा था। छात्र आन्दोलन के समय में बहुगुणा जी भूमिगत रहकर कार्य करते थे किन्तु शीघ्र ही वे पुलिस के निशाने पर आ गये और सरकार विरोधी गतिविधियों मे संलिप्तता के आरोप मे कई बार जेल भी गये। बहुगुणा जी अपने छात्र राजनीति के समय में कम्यूनिस्ट विचारधारा के समर्थक थे। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय बहुगुणा जी लाल बहादुर शास्त्री के सम्पर्क मंे आने के बाद धीरे-धीरे कांग्रेस की विचार धारा को अपनाने लगे। अंग्रेजी हुकूमत और अत्याचार के प्रति बहुगुणा जी ने अपने छात्र संगठन के माध्यम से कई बार जुलूस निकाला और राष्ट्रीय आन्दोलनकारियों को छात्रशक्ति के रूप में सहयोग किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बहुगुणा जी ने अपना जीवन सक्रिय राजनीति की ओर लगाना चाहा और वर्ष 1952 में उत्तर प्रदेश विधान सभा के चुनाव में जीत कर इसका शुभारम्भ किया। उत्तरप्रदेश विधान सभा सदस्य निर्वाचित होने पर हेमवती नन्दन बहुगुणा ने किसानों और मजदूरों की माँग को अब और जोर-शोर से उठाना शुरू कर दिया। फैक्ट्रीयों में स्वामियों व जमींदारो की शोषणवादी प्रकृति और सरकार की उदासीनता वाले रवैये के प्रति बहुगुणा जी अपने ही सरकार के खिलाफ मुखर हो गये थे। इस कदम से एक ओर जहाँ बहुगुणा जी गरीब, मजदूरों और किसानों के मसीहा कहे जाने लगे तो वहीं गांधीवादी कम्युनिस्ट के समर्थक भी कहे जाने लगे। यदापि बहुगुणा जी पर इस विरोध का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। एक जनप्रतिनिधि के रूप में बहुगुणा जी ने मजदूरों, किसानों, गरीबों की समस्याओ के अतिरिक्त शिक्षा, उद्योग, सामाजिक समानता आदि जैसे मुद्दों को भी सदन मे उठाने लगे जिससे उनके राजनीतिक छवि और मजबूत होने लगी।

1957 में उत्तर प्रदेश विधान सभा में दूसरी बार निर्वाचित बहुगुणा जी को श्रम विभाग में संसदीय सचिव नियुक्त किया गया था। तीसरी बार निर्वाचित होने पर बहुगुणा जी श्रम विभाग के उपमंत्री बनाये गये। 1969 में बहुगुणा जी कांग्रेस के महासचिव बनाये गये। 1971 मंे लोकसभा चुनाव हुये थे और बहुगुणा जी स्वयं पहली बार इलाहाबाद की प्रतिष्ठित लोकसभा सीट से विजयी हुये थे। 1971 के लोक सभा में बहुगुणा जी को इंदिरा गांधी सरकार में संचार राज्यमंत्री नियुक्त कर मंत्रीमण्डल में लाया गया था।

उत्तर प्रदेश विधान सभा सदस्य, लोकसभा सदस्य बनने के बाद केन्द्र में राज्यमंत्री बनाये जाने तक का सफर संसदीय राजनीति का एक अध्याय बहुगुणा जी ने पूरा कर लिया था जिसके बाद बहुगुणा जी की गिनती देश के अनुभवी राजनेताओं मे होने लगी थी। लोकसभा चुनाव के बाद कांग्रेस के सामने उत्तर प्रदेश में विधान चुनाव कराने की चुनौती थी क्योंकि देश में इंदिरा गांधी सरकार के प्रति बढ़ते असन्तोष से उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की स्थिति अच्छी नहीं थी। जिससे इंदिरा गांधी ने बहुगुणा जी को उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की स्थिति सुधारने के लिए नवम्बर, 1973 में मुख्यमंत्री नियुक्त कर दिया। अल्प समय के लिए बनाये गये मुख्य मंत्री बहुगुणा जी नके सम्मुख गम्भीर चुनौतियाँ थी। जिसमें मुख्य रूप से देश में चल रहे पी0एस0सी जवानों का विद्रोह था। एक उदार हृदय वाले बहुगुणा जी दलित, अल्पसंख्यक, वर्ग के लिए सहानुभूति रखते थे। अपने मुख्यमंत्री काल में बहुगुणा जी ने इन वर्गों के लिए कई प्रकार की योजनाएंे चलाई थी जिससे उनका उत्थान हो सके 1975 में इंदिरा गांधी के द्वारा लागू किये गये आपातकाल का बहुगुणा ने विरोध किया था यहीं से इंदिरा गांधी और बहुगुणा जी के बीच तल्खी बढ़ने लगी। यहाँ तक की बहुगुणा जी ने 25 नवम्बर 1975 को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया तथा 1977 में 'कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी' नामक एक नई पार्टी का गठन किया और जनता पार्टी के सहयोग से लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुये। जनता पार्टी में मोरारजी देसाई की सरकार में केन्द्रीय पेट्रोलियम रसायन और उर्वरक मंत्री बनाये गये। जून 1979 में कांग्रेस के सहयोग से चौ0 चरण सिंह की सरकार में पुनः केन्द्रीय मंत्री बनाये गये। 1980 के लोकसभा चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस में पुनः शामिल हो गये और कांग्रेस के महासचिव बनाये गये। 1980 के लोकसभा मध्यवाधि चुनाव में बहुगुणा जी गढ़वाल से निर्वाचित हुये। एक बार पुनः कांग्रेस में बढ़ता परिवारवाद और बहुगुणा जी के लिए अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो गयी। बहुगुणा जी ने इस बार संसद सदस्य और पार्टी दोनों से ही इस्तीफा दे दिया था। राजनीतिक जीवन में बहुगुणा जी का अन्तिम लोकसभा 1984 में अमिताभ बच्चन के खिलाफ था जिसमें बहुगुणा जी को हार का सामना करना पड़ा था। एक लम्बे राजनीतिक भाग दौड़ भरी जिन्दगी में बहुगुणा जी का स्वास्थ्य भी गिरने लगा था। चिकित्सकों के मना करने के बाद भी बहुगुणा जी समाज कार्यो में लगे रहे। स्वास्थ्य के प्रति अनदेखा करना बहुगुणा जी के लिए घातक साबित हुआ और 70 वर्ष की आयु 17 मार्च, 1989 में गढ़वाल के लाल और हिमालय पुत्र का निधन हो गया था।

निष्कर्ष

बुघाड़ी में बहुगुणा जी का जन्म उस समय हुआ था। जब देश मंे जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड जैसी अमानवीय घटना घटी थी। यह वह समय था जब आर्य समाज पुनः भारतीय परम्परा को जीवित करना चाहता था। अपनी विषम परिस्थितियों के बावजूद भी बहुगुणा जी ने वो उपलब्धि, ख्याति, अर्जित की जो वर्तमान परिस्थितियों में सम्भव नहीं है क्योंकि निष्चल, स्वच्छ, छवि, लोकप्रिय जननायक, सिधान्तों के आधार पर कार्य करना आज की राजनीति में सम्भव नहीं है।

1936 से 1942 तक के समय में बहुगुणा जी छात्र आन्दोलन से जुड़े रहे और राष्ट्रीय आन्दोलन में छात्र संगठन के द्वारा भूमिगत रहकर कार्य किया। वर्तमान छात्र राजनीति अपने हृदय मे देश प्रेम न रखकर, ईर्ष्या की भावना रखने लगी है और वही स्थिति राजनीतिक दलों की है क्योंकि इनकी भावभंगिमा वक्रगामी होने के साथ पद का मद भी बढ़ने लगा है। जनता के प्रति अपने कर्तव्यों को अहसान के रूप में पेश किया जाता है। स्थिति यह है कि 'न भूतो न भविष्यति' जिसके कारण पग-पग पर उच्छश्रंखलता परिलक्षित होने लगी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद में भारतीय राजनीति में बहुत परिवर्तन आ गया है चाहे वह स्थानीय राजनीति हो या छात्र राजनीति या फिर सक्रिय राजनीति हो। क्योंकि जैसी राजनैतिक केन्द्र स्तर पर होती है वह गतिविधियाँ नीचे तक आती रहती है जिससें अव्यवस्थाओ का भुगतान आम जनता को करना पड़ता है। बहुगुणा जी ने इन सब चीजों से दूर रहकर राजनीति में एक अलग पहचान बनाई जिसका फल उनके बच्चों श्री विजय बहुगुणा (पूर्व मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड), रीता बहुगुणा जोशी को मिला था। राजनीति में व्यक्ति आम जनता के लिए किये विकास को अपना एहसान ना माने तथा सदैव एक जन प्रतिनिधि के रूप में कार्य करें तो अवश्य ही व्यक्ति जनमानस के हृदय में एक देव स्वरूप व्यक्तित्व निवास करेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कोठारी रजनी, भारत में राजनीति (द्वितीय संस्करण) प्रकाशन - ओरियंट ब्लैकस्वान: 1972*
2. *चन्द्र विपिन, लोकतंत्रत, आपातकाल और जय प्रकाश नारायण, अनामिका पब्लिशर्स एडं डिस्टीब्यूटर्स*
3. *मदन डॉ0 जी. आर. समाज कार्य, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, नई दिल्ली -7*
4. *चन्द्र इंद्र रजवार, हिमालय पुत्र हेमवती नन्दन बहुगुणा*
5. *नेगी कुंवर सिंह 'कर्मठ'; स्व0 हेमवती नन्दन बहुगुणा*
6. *सिंह डॉ0 यशवंत कठोच, उत्तराखण्ड का नवीन इतिहास*
7. *भट्ट डॉ धर्मानन्द, उत्तराखण्ड राज्य निर्माता आन्दोलन का इतिहास*
8. *अस्थाना कुवँर राज, नारायण दत्त तिवारी (सदी का विकास पुरूष) रश्मि प्रकाशन, देहरादून 2005*
9. *शर्मा संगीता, समकालीन भारत की सामाजिक समस्याऐं, रोहित पब्लिकेशन नई दिल्ली - 110008, 2013*